श्री मुनिसुव्रतनाथ

दीप अर्चना/ॠद्धि विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री मुनिसुव्रतनाथ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
कवर-पृष्ठ	:	विशाल जैन (गोलू) बैराड़
संस्करण	:	प्रथम, ११०० प्रतियाँ
प्रसंग	:	श्री १००८ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीस-चौबीसी जिनालय नरवर किला उरवाहा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव ७ से १२ मार्च २०२१
लागत मूल्य	:	२०/-
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
प्राप्ति स्थान	:	निखिल, सुशील जैन करैरा, झाँसी 9806380757, 9407202065
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

स्व. चौ. प्रेमचंदजी (रस्सी वाले) की पुण्य स्मृति में
श्रीमती कटोरी बाई, जिनेश-श्रीमती मंजू
राकेश-श्रीमती राधा, धरमेन्द्र-श्रीमती प्रतिभा
निकेश-श्रीमती प्रियंका, नेहा, आयुषी, साक्षी,
समकित, चिराग, गनिक जैन
फर्म—प्रेमचंद जिनेशकुमार जैन (रस्सी वाले), शिवपुरी

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्रीवृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह चैतन्य चमत्कारी श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'श्री मुनिसुव्रतनाथ दीप अर्चना/ऋद्धि विधान'** की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से ४८ अर्घ्य/दीपों के साथ अथवा एक दीप के साथ यह आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना- 9425128817

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा....
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुए, मन की अखियाँ खोल॥

(शंभु)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जगलोचन !, हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आई टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिए, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिए।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्!, अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम हमारा जब होता तब, हम रोते पर सब हँसते।
गर सुधरा फिर जरा-मरण तो, सब रोते पर हम हँसते॥
जनम जरा वा मरण नशाने, प्रासुक जल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं ...।

मौसम या सूरज का तपना, कभी-कभी तो रुच जाए।
पर मन का संताप जीव को, सदा-सदा ही झुलसाए॥
भव-भव का संताप नशाने, यह चंदन स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ...।

कहीं-कहीं सम्मान मिले पर, कहीं-कहीं अपमान मिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, किस्मत से जिनधाम मिले॥
पद की सम्पद आपद हरने, ये तंदुल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ...।

नासा का आकार फूल सा, सौरभ पाने ललचाए।
जिससे आतम पापी बनती, काम व्यथा यों तड़फाये॥
काम, विवादों की जड़ हरने, पुष्प गुच्छ स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मरें भूख से कम प्राणी पर, खा-खा के मरते ज्यादा।
फिर भी खाने को सब दौड़ें, मरे भूख का ना दादा॥
क्षुधारोग आतंक हरण को, नैवेद्यक स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ...।

सूर्य हजारों किरणों वाला, महामोह तम हर न सके।
नाथ! आपकी एक किरण से, नशे वही कुछ कर न सके॥
मोह हरण को मिले उजाला, भक्ति दीप स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं ...।

सोने की संगत से कपड़े, मूल्यवान यशवान हुए।
तो फिर भक्त आपके बनकर, क्या? अपने ना काम हुए॥
अष्ट कर्म कालिख हरने को, धूप गंध स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ -जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ...।

अरे! फलों से लदे पेड़ तो, धरती पर नत-मस्तक हों।
वैसे नाथ! आपको नमकर, भक्त आपके उन्नत हों॥
उन्नत होकर मोक्ष प्राप्ति को, प्रासुक फल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ...।

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं ...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

श्रावण दूजा कृष्ण को, तज प्राणत सुर इन्द्र।
सोमा माँ के गर्भ में, आए सुव्रत नंद॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

वैशाख कृष्ण दशमी तिथि, जन्मे सुव्रतनाथ।
सुमित्रनृप के आँगने, सुर नर नाँचे साथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

दशमी वदि वैशाख को, परिग्रह का गृह छोड़।
मुनिसुव्रत तप से सजे, सो नमोऽस्तु कर जोड़॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

नवी कृष्ण वैशाख को, हर ली संकट रात।
भज चाहें कैवल्य हम, जय मुनिसुव्रत नाथ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

फागुन द्वादश कृष्ण को, इक हजार मुनि साथ।
मोक्ष गये सम्मेद से, नमोऽस्तु सुव्रतनाथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[यदि मात्र पूजन करना हो तो पेज नं. २३ पर जयमाला करके पूर्ण करना चाहिए।]

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...। -४

(जोगीरासा)

वर्तमान चौबीसी में मुनि-सुव्रतनाथ निराले।
मन के गोरे तन के काले, संकट हरने वाले॥
भय दुख संकट शनिश्चरों से, ये दुनियाँ घबराई।
मिले नहीं संकटमोचक सो, याद आपकी आई॥ ओम् ...
हे! मुनिसुव्रतनाथ हमारे, हृदय विराजो स्वामी।
टलें उपद्रव विघ्न कष्ट दुख, करो कृपा वरदानी॥
'सुव्रत' को भी सु-व्रत देकर, विद्या दो कल्याणी।
सुख सम्पत्ती होवे घर-घर, स्वस्थ रहे हर प्राणी॥ ओम् ...
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
मुनिसुव्रत को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

===

श्री मुनिसुव्रतनाथ दीप अर्चना/ऋद्धि विधान

अर्घ्यावली

(लघु चौपाई)

कर्म इन्द्रियाँ करके अंत, जिनवर बने प्रभु अरिहंत।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१॥

अवधिज्ञान का पा आलोक, हरें जगत के सारे शोक।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२॥

परमावधि का मिला प्रकाश, परमातम में किए निवास।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३॥

सर्वावधि का पाकर सार, किए स्वस्थ सारा संसार।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥४॥

अनन्तावधि का पा आधार, हुए पार पहुँचाओ पार।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥५॥

कोष्ट बुद्धि का पाकर ज्ञान, स्वामी रखें सभी का ध्यान।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥६॥

बीज बुद्धि की करके खोज, सुख-धन बाँटो सबको रोज।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥७॥

पदानुसारी चलकर पंथ, स्वामी करो हमें निर्ग्रंथ।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥८॥

संभिन्नश्रोतृ देकर गीत, पक्की करो हमारी जीत।
जय-जय हे! मुनिसुव्रतनाथ, नमोऽस्तु कर हम टेकें माथ॥

ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥९॥

(सखी)

हे! स्वयं बुद्ध वैरागी, दुख हरो हमारे त्यागी।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१०॥

प्रत्येक बुद्ध संन्यासी, हम चरण-शरण के वासी।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥११॥

हे! बोधित बुद्ध निरंजन, प्रभु दूर करो आक्रन्दन।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१२॥

ऋजुमति मनःपर्यय पाए, सो मन में आप समाए।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१३॥

मनःपर्यय विपुलमति को, प्रकटाए निज शक्ति को।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१४॥

दस पूर्व ज्ञान के धारी, कब दोगे मुक्ति सवारी।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वियाणं (दसपुव्वीणं) श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१५॥

चौदह पूर्वों के ज्ञानी, कर दो हमको विज्ञानी।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वियाणं (चउदसपुव्वीणं) श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../ दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥१६॥

अष्टांग निमित्त निखारे, सो हमने चरण पखारे।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

गुण अणिमा आदि सँभारे, सो सबको मिले किनारे।
जय सुव्रतनाथ जिनन्दा, दो हमको परमानंदा॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१८॥

(जोगीरासा)

विद्याधर नर त्याग असंयम, संत बने अनगारी।
संयम धारी मुक्तिवधू के, पूज्य बने अधिकारी॥
विद्याधर मुनियों के स्वामी, सबके कष्ट मिटाएँ।
हम तो सादर करके नमोऽस्तु, मुनिसुव्रत को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥१९॥

चारण ऋद्धि प्रकटा के मुनि, जग को स्वस्थ बनाएँ।
जहाँ चरण धरती पर रख दें, चारण मंत्र सिखाएँ॥
चारण ऋद्धि ऋषियों के प्रभु, हमको पार लगाएँ।
हम तो सादर करके नमोऽस्तु, मुनिसुव्रत को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥ २०॥

आगम पढ़े बिना हों ज्ञानी, प्रज्ञा श्रमण मुनिंदा।
मंदबुद्धि के दोष नशाएँ, देते ज्ञान चुनिंदा॥
व्यसन पाप अज्ञान बुराई, जग से पूर्ण मिटाएँ।
हम तो सादर करके नमोऽस्तु, मुनिसुव्रत को ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥२१॥

(हाकलिका)

जो आकाश गमन करते, दया प्राणियों पर करते।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥२२॥

आशीर्विष को जो धारें, किन्तु जीव न वो मारें।

मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो आसिविसाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥२३॥

दृष्टिर्विष को जो धारें, हम भक्तों को वो तारें।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥२४॥

उग्रतपों के जो धारी, कर्मों के हैं संहारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥ २५॥

दीप्त तपों के जो धारी, सबको देते दीवाली।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥२६॥

तप्त तपों के जो धारी, देते ऊर्जा हितकारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥२७॥

महातपों के जो धारी, मंगलमय मंगलकारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥२८॥

घोरतपों के जो धारी, करें तपस्याएँ न्यारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥ २९॥

घोर गुणों के जो धारी, व्यसन बुराई हर्तारी।
मुनिसुव्रत जी लाड़ले, हम पर भी कुछ ध्यान दे॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥ ३०॥

(शुद्ध गीता)

पराक्रम घोर बल पाकर, लगाते ना बुराई में।
करें कल्याण जीवों के, लगाते मन भलाई में॥
सभी के लाड़ले सुव्रत, रखो कुछ ध्यान भक्तों का।
करें हम भी नमोऽस्तु तो, करो कल्याण हम सबका॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥३१॥

पराक्रम ब्रह्म अघोर गुण से, जिन्होंने कष्ट टाले हैं।
सभी को बाँटते संबल, उन्हीं के हम हवाले हैं॥
सभी के लाड़ले सुव्रत, रखो कुछ ध्यान भक्तों का।
करें हम भी नमोऽस्तु तो, करो कल्याण हम सबका॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

धरें आमर्ष-औषध जो, उन्हें करुणा सुहाती है।
कभी न मारते प्राणी, दया सबको लुभाती है॥
सभी के लाड़ले सुव्रत, रखो कुछ ध्यान भक्तों का।
करें हम भी नमोऽस्तु तो, करो कल्याण हम सबका॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥३३॥

(दोहा)

खेल्ल-औषधि धारके, हरते रोग तमाम।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३४॥

जल्ल-औषधि धारके, करके स्वस्थ जहान।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३५॥

विप्रुष औषधि धारके, हरें मैल अज्ञान।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं (विप्पोसहिपत्ताणं) श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३६॥

सर्व-औषधि धारके, सुखी करें तन प्राण।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३७॥

मुहूर्त में चिंतन करें, बिना थके श्रुतज्ञान।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

मुहूर्त में वाचन करें, बिना थके श्रुतज्ञान।
सुव्रत सबके लाड़ले, हम सबके भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(विष्णु)

उत्तम संहनन कायबली ने, मुक्तिवधू हेतु।
कायोत्सर्ग धार कर त्यागे, पापों के सेतु॥
संयम योग्य कायबल पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥४०॥

पाणिपात्र का भोजन तप से, होता क्षीर समान।
त्याग तपस्या की यह महिमा, ऋषियों का वरदान॥
क्षीर स्राावियों ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥ ४१॥

कर-पात्रों का भोजन तप से, होता जैसे घी।
सुव्रत संयम की यह महिमा, सबको भाये जी॥
सर्पिस्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥४२॥

कड़वा-कड़वा भोजन तप से, होता मधुर समान।
महाव्रतों की मंगल-महिमा, दें चेतन रसपान॥
मधुस्रावी सब ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥ ४३॥

विष-जहरीला भोजन तप से, होता अमृत सा।
सकल चरित की पूजित महिमा, आतम स्वाद वसा॥
अमृतस्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमडसवीणं (अमियसवीणं)श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥४४॥

शेष रहा ऋषि भोजन तप से, कटक पेट भर दे।
व्रत-चर्या की पावन महिमा, सबको निज घर दे॥
यह अक्षीण माहनस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ४५॥

ढाईद्वीप से सिद्धशिला तक, सिद्धक्षेत्र सारे।
भक्तों की ये सिद्ध-भक्तियाँ, आतम श्रृंगारे॥
ओम् णमो सिद्धाणं जप के, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसिद्धायदणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥४६॥

दोष त्याग के पूज्य गुणों का, आरोहण करते।
अपवादों से दूर जगत को, प्रभु क्षण-क्षण करते॥
वर्धमान चारित्र धारने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

नग्न साधुओं से संचालित जिनशासन होता।
णमो लोए सव्वसाहूणं, मंत्र पाप खोता॥
पूज्य आर्ष मुनि परम्परा को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं सुव्रतनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप सुव्रत, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

मुनिसुव्रत स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धि सम्पन्न श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं।

जाप्य मंत्र—ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

गुण गण के भण्डार हैं, मुनिसुव्रत भगवान्।
जयमाला के नाम हम, करते कुछ गुणगान॥

(सुविद्या)

भरतक्षेत्र के मगधदेश में, रहा राजगृह धाम।
उसमें सुमित्र नामक राजा, करें राज्य के काम॥

उनकी रानी बड़ी सुशीला, सोमा जिसका नाम।
उनको सोलह सपने देकर, आए श्री भगवान्॥ १॥
बीस धनुष की ऊँची काया, मोर कण्ठ सम नील।
सभी लक्षणों से शोभित थे, सुव्रतलाल सुशील॥
कुशल राज्य के संचालन में, एक मिला संयोग।
हाथी का वैराग्य देखकर, बनें विरागी योग॥ २॥
आत्मज्ञान पा तजे परिग्रह, बने निरम्बर नाथ।
एक हजार राज-राजा ने, दीक्षा ली थी साथ॥
चार ज्ञान के धारी भगवन्, पाए केवलज्ञान।
समवसरण में हुए सुशोभित,दिए मुक्ति का ज्ञान॥ ३॥
श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, हजार मुनि के साथ।
प्रतिमायोग धार कर पाए, महा मोक्ष विख्यात॥
नाथ! आपकी नीली काया, करे मोह तम नाश।
वचन सूर्य की किरणें जग में, करतीं सदा प्रकाश॥ ४॥
आप रहे हरिवंश गगन के, निर्मल चन्दा रूप।
भव्य कुमुद को विकसित करते, दे दो हमें स्वरूप॥
नाथ! आप के तीर्थकाल में, चक्री था हरिषेण।
राम लखन रावण जन्मे थे, रामायण रूपेण॥ ५॥
कथा आपकी व्यथा नशाए, नाम करे सब काम।
फिर भी लोगों ने शनि ग्रह में, बाँध रखा प्रभु-नाम॥
मोह परिग्रह संकट बाधा, उसके होते नाश।
रोम-रोम में जिसके करते, 'सुव्रत' नाथ निवास ॥ ६॥

(दोहा)

आप गुणों के सिंधु हो, भक्ति हमारी नाँव।
हम क्या पावें पार तुम, पहुँचाओ शिव गाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महिमा—श्री मुनिसुव्रतनाथ दीप अर्चना

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

मुनि सुव्रतप्रभु का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी।
श्री सुव्रतनाथ निराले हैं, प्रभु बाबा काले काले हैं।
हैं विघ्न विनाशक संकट मोचक ज्ञानी,
प्रभु नाम जगत कल्याणी॥
प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता है, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता है।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि,
आशीष मिले वरदानी॥
आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी,
सो सिद्ध बनें आगामी॥

बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभुकी कथा कहानी,
बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥ श्री.....

===

श्री मुनिसुव्रतनाथ—आरती

(लय—छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥छूम छूम...
श्री मुनि सुव्रतनाथ हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
सुमित्र राज के राज दुलारे, पद्मावती के नयन सितारे।-२
अंगदेश अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

चौबीसी का अर्घ्य

(लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सु-व्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)